महिला विकास एवं सुरक्षा के प्रतिमानः एक अध्ययन

अजीत कुमार

महिला सुरक्षा का स्तर लगातार गिरता जा रहा है। इसके कारण हैं लगातार होते अपराधों में इजाफा। मध्यकालीन युग से लेकर 21वीं सदी तक महिलाओं की प्रतिष्ठा में लगातार गिरावट देखी गयी है। महिलाओं को भी पुरूषों के बराबर अधिकार है। वे देश की आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है तथा विकास में भी आधी भागीदार हैं। इस तर्क को कतई नहीं नकारा जा सकता की आज के आधुनिक युग में महिला पुरूषों के साथ ही नहीं बल्कि उनसे दो कदम आगे निकल चुकी हैं। वे राष्ट्रपति के दफ्तर से लेकर जिला स्तर की योजनाओं का आधार बन चुकी हैं। महिलाओं के बिना दिनचर्या की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भारतीय संविधान के अनुसार महिलाओं को भी पुरूषों के समान, स्वतंत्र, गौरवमयी जीवन जीने का हक है।

भारतीय समाज में सच में महिला सशक्तिकरण लाने के लिये महिलाओं के खिलाफ बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना और उन्हें हटाना होगा। महिलाओं के खिलाफ पुरानी सोच को बदलें और संवैधानिक और कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव लाये। समाज में महिलाओं की सुरक्षा गिरती जा रही है। महिलाएँ अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रही हैं। महिलाओं के लिए गंदे होते माहौल को बदलने की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की ही नहीं अपितु हर आम आदमी की है ताकि हर महिला गर्व से अपने जीवन को जी सके।